सुरसती

भोजपुरी तिमाही

(शोध, रचना, संस्कृति आ पुरातत्व प्रधान)



भारतीभिः भारती सजोषा–ऋग्वेद

छोट–बड़ भसन सँगे भारती–भासा सेवे लायक बाड़ी।

जुलाई २००४

संपादक

डॉ० नन्दकिशोर तिवारी

रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद, सहसराम के

मुखपत्र

विषय–सूची

क्रम	विषय	पृ० सं
१.	सम्पादकीय	३
२.	अध्यात्म –	
	व्यावहारक तत्वग्यान - स्वामा शिवानंद जी	४
३.	समीक्षा –	
	भोजपुरी में जानकीमंगल के अवतरन - नकिति	५
	भोजपुरी घाँटो में व्याजोक्ति – महेन्द्र सिंह	७
४.	कविता –	
	गंगा प्रसाद अरुण के नवगीत आ गजल	१२
	केहू कइसे रही – मनमौजी	१२
	दोहा – बरमेश्वर सिंह	१३
	लुगाई के सपना – कमल	१४
	भँवरगीत – आसिफ रोहतासवी	१५
	लिरिक – अलमस्त	१७
	गजल – बटोही	१७
	माटी कहे – विद्यार्थी	१८
	जरावऽनि – अमल सिंह	१९
	छंद (होली) – दिनेश गर्ग	१९
५.	शब्द संपदा –	
	एथुआ – नकिति	२०
६.	चीठी-पत्री	२२

सुरसती (तिमाही) जून-२००४, रुपे - पनरह १५/-
हरस भरि के - पचास

संपादक
डॉ० नन्द किशोर तिवारी
सहायक
डॉ० अनिल कुमार तिवारी
निराला साहित्य मंदिर, बिजली शहीद, सहसराम
रोहतास (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय

भाजपा गठबंधन वाला जनवरी चार के संसद बोडो, संथाली, मैथिली आ डोंगरी वे अठेआँ सूची में अहथान देके सभका के चउँका देलस। सुनलीं कि पहिले एगो खाली बोडो के सामिल करे के रहे लेकिन बाद में बाकी तीनों के ले लीहल गइल। अब संविधान के अठवाँ सूची में कुल्ही बाइस गो भासा हो गइली सँ। १९५० में खाली चउदह गो भासा के मान्यता दिआइल रहे। सरसठ में एगो भासा जोराइल सिंधी। फेरू बानबे में तीन गो आउर कोंकड़ी, मनीपुरी आ नेपाली। ओह दिन के भासन रहे कि अबहिन तेंतीस गो भासा बाड़ी सन जवना के कबो ना कबो जोरहीं के परी लेकिन ऊ दिन अबो ना आइल, देखीं कब आवेला ? भोजपुरिहा लोग ओरहन देबे जानेला, काम समया पर ना करे। क्रांति आंदोलन विदरोह करे वाला जात भासा के नावँ पर खाली ओरहन देता, ईहो विडंबने बा। भोजपुरिहा सांसद खुश हो गइलन खाली एगो बात से – अब जदी कबो एगुड़ो भासा जोड़ाई त ओह में भोजपुरी के नावँ पहिले रही। राजनीतिग्य लोग भासा, नारा, आश्वासन पर बड़का से बड़का दंगल मारेला ई देखाइल।

जवन जानकार लोग बाड़न उनुकर चउँकल सुभाविक बा। ऊ लोग बिहार के भसन में भोजपुरी के कहवाँ अहथान बा खूबेतरी समुझत बा। एह भासा के पासे का नइखे जवना से एकरा के ना सूची में लिआइल। सोरह करोर लोग एकरा के अपना व्यवहार में लावत बाड़न। बोले में, साहित्य में, भोजन के उपाय खोजे में, सिनेमा में, पत्र-पत्रिका में। चूल्हा-चाकी से लेके परेम के भासा, सन्त विनोद के भासा। साहित्य के महारथियन के भासा, बड़-बड़ भासा वैग्यानिकन के लोहा मानल भासा। दर्शन आ समुझ के भासा। तिरदंडी स्वामी जइसन संत के प्रवचन के भासा आ सैकड़न संत कविअन के साथे तुलसी आ कबीर के भासा। ऊ अँठई सूची के अधिकारी ना भइल त एहमें ओकर कहाँ गलती बा। गलती त सोच समुझ के बा। संसद में बइठ के उँघाए वाला लोगिन के बा आ अंततः इहाँ के जनता के बा। एह से अपना भोजपुरी समाज के भी चरित्र जादा उजागर भइल। जइसे इहाँ के लोगिन के, सांसदन के अपना भासा आ जातीय संस्कृति के कवनो ग्यान नइखे। कवनो प्रतिक्रिया ना भइल एह समाज में। कवनो सांसद एहखातिर धरना प ना बइठलन। कवनो विरोध कतहीं ना कइलन। अपना भोजपुरी समाज के समुझ के सबूत कतहीं से ना मिलल। ई एहसे कि साहित्यकार जे नइखे ऊ साहित्यकार के चोला प्रकासन के नाम पर पहिरके सम्मान लेबे में रात-दिन लागल बा। खूब लिखाता, छपाता लेकिन ओकरा के कूकुर भी सूंघे वाला नइखन। कुल्ही साहित्य के बिधन पर कलम चलावे के धून लागल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

डोंगरी के एगो कविता के अनुवाद पढ़त रहीं। ऊपर से ना लागल कि हिन्दी के कवनो कविता से ऊ कमजोर होखे। भोजपुरी में केहू के अनुवाद अइसन होखो तब न कहीं कि अठई-सूची में अइसहीं अहथान दिआता। एगो झंडा खातिर एगुड़े डंडा होला। भोजपुरिया अपना समने केहू के ना लगावस। पीछा चले ना जानस। अपने विरदंग अपने बजावे ले। इनिकर कूद अचानक कूद होला। नाक-मुंह टूटे भले, कूदब जरूर। अब देस आ भासा के सम्बन्ध में के सोचते बा। एही जिनिगी में अपना काम के नाम आ इनाम दूनो लिहल चाहत बा। जिअते में आपन समाधि बनाए वाला साधुअन अस। राजनीति पर विसवास बा, साहित्य लेखन पर कम। प्रकासन के साहित्य सृजन मान लिहल गइल ई सबसे बड़का अपराध बा। हाला होखे के चाहत रहे। जगह-जगह से आ सदन से। चूँ-आवाज तक ना आइल। विसेसग्यन के समिति बनाके ई भार सउँपे के चाहत रहे। ओकरा प्रतिवेदन के आधार पर निरनय लेबे में कवनो कठिनाई ना रहे। अब त राजनीति आ साहित्य दूनों में छेत्रीयता छा गइल। दल कवनो राष्ट्रीय स्तर के ना रह गइल आउर ना साहित्यकार। एहसे भासा, संस्कृति आ विद्वानन के नीचा अहथान देखहीं के परी। एकर पहिलका सीढ़ी ह भोजपुरी के असन्मानित करे के साजिश। इतिहास एह खातिर न साहित्यकार, न राजनीतिज्ञ, न जनता केहू के छेमा न करी।

❖ ❖ ❖

व्यवहारिक तत्वग्यान

स्वामी शिवानन्द जी 'तीर्थ'

ब्राह्मण छत्री वैस्य के अगिन देवता और।
मुनिजन हिय मूरत अबुध, समदरसिन सभ ठौर ।।

ब्राह्मन लोग खातिर अगिन देवता हवन। मुनि लोग के हृदये देवता ह सधारन बुधी के अदिमी खातिर मूर्ती देवता ह आउर समदरसी खातिर सउँसे संसारे देवता ह। अतने कुल्ही बेद, पुरान आ सास्त्रन के निचोड़ बा। जेकर जइ न जोग्यता, ओइसने ओकर इष्ट चाहें देवता होलन। नास्तिकन के आपन अहंकार देवता होलन। कर्मवादियन के कर्म देवता हवन, अध्यात्मवादियन के अध्यात्म देवता, भौतिकवादियन के आधुनिक विग्यान देवता, स्त्रियन के उनुकर पति देवता, मुमुच्छु खातिर उनुकर गुरु देवता आ भगतन खातिर भगवान देवता हवन। जेकरा जवना चीज में इष्ट भाव बा ओकरा जोग्यते के अनुसार ओकर ऊहे देवता होलन। जेकरा से हमार इच्छित बस्तु के प्रापत होला ओकर ऊहे देवता होला। जवना अदिमी के बुधि-विचार छोट

www.bhojpurisahityangan.com

होला, अेकर ईछा भी छोटहन चीज पर जाके टिक जाला। ईहे बात देवता के विषया में भी होला। छोट बुधीवालन के छोट देवता आ बड़ बुधिवालन के बड़ देवता। साधारन अदिमी के खइनी-तमाकू चाही आ आजुकाल के बड़ लोगन के सिगरेट, सिगरेटो में चुरुस आ सराबो में वेशकीमती सराब। खइनी खाए वाला के जदि ऊ ना मिले त देखीं ओकर बेचैनी। साधारन अदिमी एगो छोट से छोट संसारिक चीज के अधीन हो जाला लेकिन भगत लोग बड़ा से बड़ा राज में भी आसक्त ना होखस। संसार के कुल्ही चीज अदिमी के सामने जादा जड़ बा। माने बहुते छोट बा। तबो अदिमी अपना पसु-भाव के चलते ओह तुछ बस्तू में आसक्ति कइके बन्हा जाला। अकारने दुख मान के रोवत फिरेला। कोई ओझा किहाँ जाला, कोई गरह-गोचर के निवारन खातिर जप करवावेला, कोई सूई-दवाई में बिसवास करेला।

ई कुल्ही अहंकार के अनेकन रूप ह। अपना मुरूखता से सभे अकारन बोझा ढोवत-ढोवत मर रहल बा। मोह के गठरी उतरते कपार के बोझ हलका हो जाई। हमनी के परमपिता के गोदी में बइठल बानीं जा, लेकिन एकर अनुभव नइखे हो पावत। बगल में लइका सहर में ढिंढोरा।

अनु०- नकिति

भोजपुरी में गोसाईं जी के जानकी मंगल के अवतरन

डॉ० नन्द किशोर तिवारी

गोस्वामी तुलसीदास जी कवनो काम के बड़-छोट कहल अपराध मानत रहीं- को बड़ छोट कहत अपराधू। सृष्टी में सभकर अपना जगहा पर महत्व बा। एही-से उँहा के देखे में छोटहन रचना 'जानकी मंगल' भी 'रविमंडप देखत लघु लागा' नीअन अरथ राखत बीआ। हमरा बड़ा सुख मिलल एकर भोजपुरी रूपान्तर देखिके। पं० घनश्याम मिश्र जी एकरा पहिले गीता अइसन 'सभदर्शन के एक दर्शन' ग्रंथ के भोजपूरी में कइके अपना समरथ के प्रमाण दे चुकल रहीं। ई दोसरका अवधी-ब्रजी के भोजपुरी में कइ के अपना मातृभाषा के सेवा के प्रमाण ह। कवनो साहित्यिक विचार वाला पाठक के मन में हो सकेला कि 'जानकी मंगल' के भाषा संसकिरित त ह ना। फिर एकर भोजपुरी में कइला के परोजन ? एकर ऊतर निराला जी अइसन महान् हिन्दी कवि के माध्यम से साइत मिल सकेला। ऊहाँ के सं० २००५ में रामचरितमानस के खड़ी बोली में अनुवाद कहीं चाहे रूपान्तर कइले रहीं। ऊहाँ के तरक ई रहे कि खड़ी बोली के लोग अवधी के दोसर मत समुझि के तेआग देस। घनश्याम जी बहुत ठीक सोंच के एकर रूप भोजपुरी में रखले बानीं। जानकी मंगल आजु से चार सै बरिस पहिले लिखाइल रहे। दू पीढ़ी पहिले हिन्दी वाला लोगन के जतना ऊ सरल-सहज रहे ओतना आज के हिन्दी पढ़े वाला खातिर ऊ नइखे। भोजपुरी के विकास अनेक तरफ से होखे खातिर हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्य के भोजपुरी में आइल जरूरी बा। अगर अइसन ना होई त भाषा आउर संस्कृति के ई परम्परा के बहुते जरूरी कड़ी अपने टूट जाई। चौसर के साथे अंग्रेजी पाठकन के अइसहीं सम्बन्ध टूट गइल रहे। ई साहित्य

www.bhojpurisahityangan.com

के बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न बा आ घटना भी। कहीं अइसहीं गोसाईं जी भी मत हमनी से छूटि जास। भोजपुरी में एह 'जानकी मंगल' के अनुवाद अनेक तरह के दृष्टि हमनी के देत बा। दोसर बात ई कि मिसिर जी के ई रचना अनुवाद मात्र ना ह। भोजपुरी के अनुकूल होके मूल रचना से अलगा भी बा। एह में अपना प्रतिभा से गोसाईं जी से नजदीक जाए के प्रयास बा। ऊँचा-नीचा धरती पर रचिके एगो नाया रसता देखावे के भी खाहिस बा। अपना बनावे खातिर ओकर मूल के सुनरता आ सुघरता के पूरा रच्छा-कइल बा एहसे ई कृति स्वतंत्र आ मौलिक रचना के अनंद देतिआ।

अब हम जानकी मंगल में लागल 'मंगल' सब्द पर विचार करत बानी। गोसाईं जी के मानस खाली नानापुराण निगमागम ना ह बलुक उनुकर कूल्ही रचनवें ऊहे हईं स। मंगल सब्द बिलकुल वैदिक वाङ्मय के सब्द ह। ऋग्वेद में 'सुमंगलश्च शकुने मनासि' के साथे वीसो पर्यायन के साथे ई शब्द मनुष्य के शुभवृति के परिचायक बनिके आइल बा। अर्थ प्रयोजन आउर अधिगम के दृष्टि से अंग + मतुप् अर्थ = मंगल हो गइल बा। 'अ' के 'म' मंग + र = भोजपुरी में मंगर कहल जाला। मंगल के अरथहऽ जे पाप के भंजन करे ऊ मंगल ह। आउर दोसरो तरह से एकर अरथ कइल गइल बा, कहल जा सकेला। गृ (निगलल - लीले के अरथ में) + अच् = गर गलधातु के पहिले मयट् आउर अनुसवार के आगम होखला से मंगल शब्द बनल। अनर्थ आ विघिन के जे लील जाए वाला होखे। तिसरका अरथ ह- मंगयति गमयति सुखम् - जे सुख देने पहुँचावे वाला होखे ऊ मंगल ह। मंग = (गत्यर्थक + अलच्) = मंगल। चउथा - मां गच्छतु - हमरा पास आवे - एह अरथ में। पचवाँ - ग्री- (अस्तुति अरथ में) + ऊच् = मंगल यत् स्तुत्वे भवति चाहे यत् गीरति भक्षयति अनर्था - जे अनरथन के निगल जात होखे - ऊ मंगल ह। जइसे ऋग्वेद में - कनि क्रदत अन्मशं.....सुमंगलश्च शकुने मनासि (ऋ० २८/१) एगो प्रयोग भइल बा। वेद में एकर पर्याय शम, शंभु, कल्याण, मंगलिका, स्वस्ति सूक्त अनेकन रूप में आइल बा।

लेकिन मंगल शब्द पर जादा जोर बा- मांगलिकेभ्यः स्वाहा। फिरू कल्यान (कम् + यक + आन्) जेकर के सभे कामना करे ऊ कल्यान ह। मंगल शब्द के प्रसंग के अधार पर हतना अउर अरथ भइल बा। कुसल, कल्यान, सुभ, मांगलिक कार्य, बिआह शुभ संसकार। साँच पूछल जाव त मंगल अदिमी के, मानुस जाति के सुभवृतियन के परिचायक ह। व्यक्तिगत कल्यान के भावना अंतःकरने में उगेला। ओही घरी अदिमी, समुदाय, समाज, जेकरा के अन्हका समुझत बा ओकर हित, भलाई करे के अनुभव करे लागेला। एहिजे मंगल भाव मुखर होला। ई उदातीकृत हित भावना मनुष्ये कर सकेला काहें से कि ओकरा 'स्वान्तः' में सर्वान्तः के उदय होला। इहे अध्यात्मिक चेतना शुभेच्छा में बदल जाला आ अदिमी परमपुरुष परमतमा के नजदीक चल जाला। गोसाईं जी मंगल-शब्द पर लहालोट रहीं। उनुकर मांगलिकता छन्दन में भी परगट भइल बा। उनुका चलते बिआह बरनन जतना काव्यन में भइल ऊ मंगले कहाइल। उहाँ के जानकी जी के साथे पार्वती जी के भी बिआह करवलीं। मानस में त पहिले पार्वती जी के कराके तब जानकी जी के करवलीं। 'रासो' में भी विनयमंगल एही खातिर आइल बा। नंददास 'रूक्मिनी

www.bhojpurisahityangan.com

मंगल' लिखले, सूर जी राधामंगल आ बंगाल में त मंगल काव्य के लाम परम्परा चल गइल। 'मनसा मंगल' आ चंडी मंगल, बंगला भासा के परधान मंगल काव्य ह। मनसा रूपन के देवी हई उनुका से संबंधित साठ गो मंगल काव्य लिखाइल बा। मराठी आ तेलुगु में भी एकर परंपरा चलल बा।

अतना बात एहसे कहे के परल ह कि भोजपुरी के लोकगीतन में ई मंगल काव्य के परम्परा वेदे काल से आ रहल बा। चुँकि लिखे के ओह भासन नीअन परम्परा अपना इहाँ ना रहे ओहसे लिखा ना सकल। गोसाईं जी त अवधी खातिर दुस्साहस कइले रहीं। हमनी के भासा वेदन के निकट बा एहसे ओह परम्परा के भी ओहिजा के अदिमी ना तूरल चाहस।

हमरा आत्मिक खुसी भइल कि मिसिर जी एकरा के अपना मातृभाषा में अपना आनंद खातिर बड़ा मेहनत से रूपांतरन कइ सकलीं। ईहाँ के कविता वंस परम्परा से मिलल बा। धन नाम विप्रजी के जेकर हर छन सिवजी के सुमरन में बीतत रहे, जेकर सत्तर बरिस के साहित्य सेवा उजागर बा जे हर दिन जनता के सेवा में अंत तक लागल रहीं। उहाँ के सुपुत्र अपना भासा, के सभ तरह से विकास करे के कोसिस एह रूपान्तर द्वारा कइले बानीं। एहसे छन्द के विस्तार भइल बा, भोजपुरी के कथन समने आइल बा, चार सै बरीस के भाव के नाया आयाम मिलल बा, गोसाईं जी के रचना के प्रति लोगन में रुझान बा। वैदिक रीति का संस्कार के अपना समाज में परचार के लक्ष्य बा। मंत्रकाव्य के जीवन मिलल बा! एह में सदाचार मंगल से जुड़त बा, मर्यादा पुरुषोत्तम के विआह के बरनन, पाणिग्रहण के रसमय चित्रन, पतिव्रता स्त्रियन के नावँ लेला से हिन्दू कन्या लोगन में ई भाव आवे एकर अभिलासा, ऊ लोग में सीता जी के सभगुन आ जाय एकर लक्ष्य; एके साथे भोजपुरी में राखल गइल बा।

हम आदरणीय भाई घनश्याम जी के रचना खातिर अन्तःकरन से सराहत बानी। उहाँ के आचरन विचार कुल्ही अनुवाद से परगट हो जाता। ई अपना में नाया रचना बनि के समने आइल बा। उहाँ के प्रतिभा एहसे परगट देखाता। एकर घरे-घरे परचार होखे के चाही। हमरा विसवास बा मंगल कार्य खातिर एकर परायन हनुमान चलीसा बनि के हर जीभ पर उतरि जाई।

(ई लेख ओह पुस्तक के भूमिका-रूप लिखाइल रहे– सं०)

❖ ❖ ❖

भोजपुरी घाँटो में व्याजोक्ति

महेन्द्र सिंह "प्रभाकर"

पुरुष वर्ग के भोजपुरी गीतन के अलगे संस्कृति ह। ओह में बीसन जोड़ी झाल के साथे ढोलक बजा के समूह में गवाला। एकर अधिकांश गायक अनपढ़ होलन जे होरी, फगुआ, फगुई, लटका, जोगिरा अवरु घांटो आदि गावल करेलन। ई सभ मौसमी गीत हवन स जवन शिशिर आ बसंत में गवाला। चइत के बसंती से मातल समय में घांटो (चइत) गावल जाला। ई कबहीं

www.bhojpurisahityangan.com

कबहीं रातो भर गवाला। एह प सोचे के विषय बा कि ओह गीतन में गवनिहारन के कवन अइसन चीज भेंटाला जवन पूरा जोर लगा के रातो भर गावे के उत्प्रेरित करेला ?

ओह अनपढ़ गायकन के ओह गीतन से विभिन्न प्रकार के रस प्राप्त होला जवना में विभिन्न प्रकार के भावन के आस्वादन कइल जाला। ओह गीतन के छन्दन में स्वर, लय अवरू ताल के जरिये भाव-सागर में गोता लगावेला। एह गीतन में व्यंजित रसांगन से (जेकर गायकन के ज्ञान ना रहे) भावविह्वल हो के साधारणीकरण तक पहुँच के रस (आनन्द) चरबन सुगमता से गायक करत रहेलन। गायकी से प्राप्त होखे वाला ई आनन्द ओह लोगन खातिर गुंगा के गुड़ खइला अइसन बा जेकरा- के ऊ लोग बैखरी से व्यक्त ना कर सकेलन।

ओह गीतन में निहित रस अवरू अलंकारन के ऊ निपढ़ गायक व्याख्याता त ना हो सकेलन बाकी ओकर आनन्द-सागर ओह लोग के सोझा लहरात रहेला। अइसने गीत-विधा में "घांटो" बा। चइती बसंत के मादकता चरमावस्था मे रहेला। बाग-बगइचा में कोइलर के पंचम के तान के कमान तनाला, तब एहू अनपढ़ गायकन के दिल के कोकिल गा उठेला : –

जइसे घांटो में : –

प्रश्न :- "हम तोसे पूछिला लहुरि ननदिया ए रामाऽऽ पिठिया में ऽ धुरिया कहवाँ लगवलू ए रामा ऽऽ पिठिया.....

उत्तर - बाबा के दुअरवा आरे नेटुआ नाचे ए रामा ऽऽ भितिया ओऽठँघत पीठि धुरिया लागल ए रामाऽऽ भितिया.....

प्रश्न :- इहोंतऽ झूठवलू गाल दूद कइलू ए रामाऽऽ चोलिया केऽ बन्दवा आरे कइसे टूटलि ए रामाऽऽ चोलिया.....

उत्तर :- भइया के जमलका लागले भतिजवो ए रामाऽऽ उन्हू के खेऽलवइत चोली बन्दवा टूटल ए रामाऽऽ उन्हुकें (भोजपुरी लोक गीतन के संसार पहिला भाग गीत सं० ३) कवनो ननद संभोग श्रृंगार रच के अभिसार से लौटल बाड़ी। उन्हुका प संभोग जनित क्षत-विक्षत देखि के भउजाई प्रश्न कर देली कि पीठि में धूर कहवाँ से लगववलू हा ? यह गुप्त रहस्य के खुलल देखि के ननद चट देनी व्याज (बहाना) कर के बात के छिपा देली कि बाबा के दुआर-प भीति में ओठँघ के नेटुआ के नाच देखला से पीठि में धूर लाग गइल बा। ई व्याज अइसन बा जवना के सत्य से अलग ना कइल जा सके। भउजाई फेर प्रश्न कर देली कि तू न गाल बजा देलू, अब ई बतावऽ कि तोहार चोली के बन्द कइसे टूटल? ननद त एक खेलाइ बाड़ी व्याज करे में उस्ताद ? तुरंत जवाब देली कि जनमतुआ भतीजा के गोदी में खेलावत खानी चोली के बन्द टूट गइल हा। इहो अइसन व्याज बा जेकरा के नकारल ना जा सकेला। देखल जाय त इहनी में व्याज के तनिको गंध तक नइखे। लागत बा कि व्याज में कहले बात साँच हा।

परम्परित लोक गीत घांटो में निहित असइन सटीक व्याजोक्ति अन्यत्र दुर्लभ बा। हिन्दी में प्रचलित अधिकांश अलंकार शास्त्रन के अधिकांश उदाहरन विद्वानन के भले कंठा भरन

www.bhojpurisahityangan.com

बनल होखे वाकी सर्वसाधारन के पहुँच से बाहर बा। "अलंकार मुक्तावली" के पृष्ठ २४० पर व्याजोक्ति के उदाहरन निम्न प्रकार से बा : –

नायिका :- "लखि हम कौं मुसुकानी, कहा तैं मन में जानी ?
सखी :- अँखिया खंजन गुन गंजन की, अंजन ओप उड़ानी।
पान पीक की लीक पलक पर, झलक रही रस सानी।।
अलक अलि ? कत उरझानी ?
नायिका :- अंजन गये रूदन ते पलकनि, कर मेंहदी लपटानी।
ललकि मयूर चढ़े अलकनिपर, चरनन चोंच गहितानी ।।
व्याल बनिता उन जानीं।

हिन्दी के ई देल उदाहरन काव्यशास्त्री विद्वानन अवरू पाठकन खातिर भले रूचिकर होखे बाकी ऊ स्वाभाविकता कहवाँ बा जवन भोजपुरी घांटो में निहित बा। नायिका के लटकल लट के नागिन समझ के मोर द्वारा चरन अवरू चोंच के प्रहार से बिखेर देल जन जीवन में वास्तविकता से बहुते दूर बा। ई कवि के प्रौढोक्ति भले हो सकेला बाकी रससिक्त करे के ऊ क्षमता कहवाँ बा जवन भोजपुरी के घांटो में बा।

करनौल, भोजपुर

❖ ❖ ❖

ठकुरी गोसाईं के गीत

घनश्याम मिश्र

बहुत पहिले एक बेरि हमरा गाँव पर एगो नाटक भइल रहे। हमरा स्कूल के एगो पण्डित जी करवले रहीं। नाँव त नइखे मन परत बाकी अतना जरूर सुरता पर बा जे हमरो के एगो छोटहने पाठ मिलल रहे, पुलिस अफसर के। चार घंटा का पूरा नाटक में हमरा एक बेरि हँकड़ि के सिपाही के हुकुम देबे के रहे कि "चोर के हथकड़ी पेन्हाइ के पाँच बेंत लगाव, बस सब भेद मालूम हो जाई।" हम अपना एह एक हाँड़ि का पाठ के अतना बेरि दोहरवलीं तेहरवलीं जे ओतना राम राम कहला पर कहिए एह असार संसार से उद्धार हो गइल रहित। सूते का बेरि, भोजन करत, चलत फिरत, दू चार संगी साथी का सोझा-अइसन लत लागल जे लाख रोकलो पर अनासे मुँह से निकलि जाइ-चोर के हथकड़ी पेन्हाइ के पाँच बेंत लगाव, बस सब भेद मालूम हो जाई"। नाटक के दिन जइसे जइसे नियरात गइल ओइसे ओइसे दर्शक लोग का सोझा पुलिस अफसर का भेष में कड़कि के कड़कड़ाए वाली हमार लालसा लहलहाति गइलि। संयोग से ऊ दिन आइल। नाटक शुरू भइल ऊ घरी भी आइलि जब हमार पारी रहे। जइसहीं परदा का बाहर

www.bhojpurisahityangan.com

अइलीं अपना सोझा अपार जन समूह देख के महीनन के रटल रटावल पाठ भुलाइ गइल। माघ में पसेना छूटे लागल अइसन जबदा लागल जे साँस रोकि के खड़ा हो गइलीं चुपचाप। परदा का पाछा से पण्डित जी जोर से हुरपेटलीं– "अरे पुलिस अफ्सर ! जल्दी बोल। बस दूनो आँखि मुँदि के जोर से एके साँस में कहि गइलीं– "बेंत के हथकड़ी पेन्हाइ के पाँच चोर लगाव, बस सब भेद मालूम हो जाई।" दर्शक समाज ठठाइ के हँसि दिहल। हमरा आपन भूल तब बुझाइल जब परदा का पाछा गइला पर पण्डित जी पीठ पर दुइ थाप देइ के ना जाने का का कहि गइलीं। ओही घरी से नाटक में पाठ करे वाली आपन लहलहाति लालसा त किकुरि के कठुआइ गइलि बाकी तबे से नाटक का पात्र लोगन के साहस देखि के नाटक देखला से अपनहूँ नगद नेह हो गइल।

बहुत दिन का बाद एक साल संजोग जुटल- एगो गाँव में नाटक देखे के। गाँव के नाँव घइला से केहू मुँह फुलाई नाक सिकुराई आ आँखि देखाई त बाहर कहाई एह से ई सब तोपले ढाँपल रही त नीक बा। नाटक का एक दिन पहिलहीं कुछ पात्र लोगन से भेंट भइल आ हम नाटक के नाँव पुछलीं। एगो नवछँटिया अपना मोंछ पर हाथ फेरत कहलनि "दानवीर कर्ण"। हमरा कुछ कहे का पहिलहीं पाछा से आवाज आइल – "ना जी महादानी कर्ण"। तिसरकू के तेवर तनाइ गइल "बताईं महराज कालहु नाटक होई, ई लोग तीन महीना से तेयारी में बा आ अभी तक एह लोग का नाटक के नाँवे सुनिश्चित मालूम नइखे। सब कुछ हमरा पुछला के बेपूछल हो गइल। बात बढ़ि गइल, डाँड़ि ढराइ गइलि, लोहा लागि गइल। कुछ लोग बीच बचाव में लगले "अबकी पारी कहसहूँ पार लागि आउ आगा साल देखल जाई। हमार हाल अपराधी के हो गइल रहे। मने में हनुमान चलीसा एह से पढ़े लगलीं जे कहीं हमरा चलते नाटक बन्द त ना हो जाई।

संजोग प्रबल होला ओह दिन गाँव जवार के नर नारी, बूढ़ पुरान, लइका सेयान के भारी भीड़ उपड़लि हजारनि आँखि परदा पर टकटकी लगवलीं स तब तक ठकुरी गोसाईं जी कूदि के अइलीं आ गावे लगलीं– "चोरी गइल तिरसूल हमरा भोला के"। गोसाईं जी एही गाँव के पुरान कलाकार आ गवइया हईं उहां का कला आ गला से बच्चा-बच्चा का नेह बा। लोग बाग-बाग हो गइल। हमरा कान में गते से एक जना कहले "कुछ दिन पहिले एही गाँव का एगो शिव मन्दिर से तिरशूल चोरी हो गइल रहे। गीत सूनि ऊ भिखारी, शेक्सपीयर आ कालिदास के दर्शन मन परे लागल। ऊ लोग का कुछ दोसरे कहले बा केहू कतनो उपंग में होखे भा तंग होखे सही बात कहे के एगो ढंग होखे ला आ ओकर अगले आपन एगो रंग होला तबे त गोसाईं जी का गीत का रंग में सभे रंगाइ गइल।। कतना नीक सवाल बा उपस्थित विशाल जन समूह का सोझा – "भोला के तिरसूल चोराइ के अपना चोला के सकेता में डाली"! कतना नीक होइत आजु ऊ तिरशूल चोरावे वाला भी एहघरी एह दर्शक समाज का बीच रहिते। हमरा बुझाइल जे अतना भीड़-भाड़

www.bhojpurisahityangan.com

में अकेले गोसाईं जी असली नाटक के पात्र आ देख निहार दूनो बाइन! मन का आँख से देखले बाड़े एह से मरम बूझे के साहस भी कइले बाड़े।

"उधरे अन्त न होइ निबाहू"। गोसाईं जी अपना जाने में पाप का अन्त के बखिया उधरले, निबाह होई की ना एह गुनावट में बूड़त उतरात दर्शक समाज के ध्यान गोसाईं जी का गीत पर कम आ ठेका का बोल पर अधिक रहे। तब तक पुरुब से हल्ला सुनाइल- चोर! चोर! गोसाईं जी के गीत बीचे में बन्द हो गइल। कुछ लोग हाँफत काँपत दर्शक समाज के सूचना दिहल-पोखरा का नियरा पूरब रोख वाला शिव मन्दिर का पुजारी के बरतन आ बिछवना चोरी हो गइल। भीड़ भरके लागलि। हम मन में सोचत रहीं- "गाहक नहीं तो गुन नाहक न खालिए। अनेरे गोसाईं जी अतना मेहनत कहलीं उहां का कला आ गला के फल त उल्टा भइल। भोला का दुख से उहां का अकेले दुखी देखात रहीं अब त पुजारिओ पर आफति आइलि।

एगो पण्डित जी संस्कृत में "प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः, कहत नाक सिकुरवलीं तब तक महिला समाज का ओरि से आवाज आइल" "नाटक असुभ हो गइल"। कुछ लोग अगले बतियावत रहे गोसाईं जी का शुरूए में चोरी के गीत ना गावे के चाहत रहे! कवनो नाटक, मंगलाचरन से शुरू होखे के चाही। गाँव के पढ़ाई छोड़ि के हाले में कालेज में जाए वाला विद्यार्थी लोग अंग्रेजी में बतकही करत रहे- "ओपेनिंग ऐन्ड बिगिनिंग ऑफ ड्रामा वाज नाट प्रापर ऐन्ड जस्ट" गोसाईं जी के दोषे का रहे। उहां का का जननीं जे गढ़वि हम आन काठ हो जाई हुँक्का। बम भोला के गीत कइसे असुभ मानल जाउ! ई बात अलग बा जे उहां का एहघरी अइसन भोला भाला हो गइल बानी जे कुल्हि गीत भइलो पर साँस तक नइखीं लेत। विचित्रता उहां के खास गुन हवे। तबे त लंका विजय का बाद भगवान श्री राम के राज तिलक का बेरि सबसे अन्त में उहां का तब पहुंचली जब देव समाज बिनती कइला का बाद ओहिजा से आपन विमान लेइ के खरकि चुकल- रहे। मानस में गोसाईं जी झूठ थोरे लिखले होखबि 'करि बिनती सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान जानि सुअसर राम पहँ आयउँ सम्भु सुजान'।

जवन कुछ भइल ओह में दोष ठकुरी गोसाईं का गीत के रहे कि बम भोला के आ कि ओह चोर के जवन पुजारी जी के बरतन आ बिछवना बटोरि ले गइलन। एही गुनावट में परल रहीं तब तक अपना छात्र जीवन का नाटक के पाठ याद परल। अफसोस एकर भइल जे पुलिस अफसर ना भइलीं ना त आज ओह चोर के पकड़ि के सिपाही से कड़कि के कहितीं जे "चोर के हथकड़ी पेन्हाई के पाँच बेंत लगाव, बस सब भेद मालूम हो जाई।"

जिला व्यवहार न्यायालय (बक्सर)

❖ ❖

www.bhojpurisahityangan.com

नवगीत

गंगा प्रसाद 'अरुण'

अँगना में आन्ही के पहरा
ओसार में
ऊफनाइल बाढ़ के तबाही।
बात-बात काकी के
चालू रामायन,
तिरिया चरित्तर पर
टोला मनसायन।
टंगना पर लहँगा के लहरा
बँड़ेरी पर
तरनाइल भाग के सिआही।
पात-पात करम के
अपने अगोरी,दिन अछइत,
भरल वाट
शील-हरन, चोरी।
कंगना पर नेह के ककहरा
चुहानी में
लालू के तावा पर टाही।
लंका में शंका के
बात ना विचारी,
हनुमत के परचा में
आवाहन जारी।
मंगना के मोका सुनहरा
सवारथ के
झोरी में चंदा उगाही।

एल-4/21, रोड नं0 17,
टेल्को कालोनी, जमशेदपुर -31004

गजल

गंगा प्रसाद 'अरुण'

बात बेबात के बढ़ाईले।
आँख अबरने प देखाईले।
झूठ लबरा के खूब पतिआईं,
जूठ झबरा के रोज खाईले।
मरम कर बात कहीं चल निकले,
तेग-तरुआर हम चलाईले।
कंठ-सुर-ताल-बोल ठेंगा पर,
फाग आ चइत हम नचाईले।
लूर आ गुर ना मिलल ते से का,
टोल अकिला फुआ कहाईले।
बान्ह के तूरि के निकल जाई,
तोर खाईले, तोर गाईले।
कुछ तासीर मिलल बा अइसन,
हँसी के बात पर रोआईले।
लोग 'गंगा' कहल कि गूंगा हम,
गूर खाईले, मुस्कुराईले।

गजल

गंगा प्रसाद 'अरुण'

कुल जगती के पीर हर लीहऽ।
एक अइसन मधुर लहर दीहऽ।
हम त चहली हमार हिस्सा में,
एक मुट्ठी अबीर धर दीहऽ।
जहाँ बेबस उदास के पहरा,
नेह-नेवरल समीर भर दीहऽ।
केहू के लोर पोछ ली बढ़ के,
मन के अतना अधीर कर दीहऽ।
जेकर तूफान में खोता उजरल,
ओह पंछी के नया बर दीहऽ।
ठहर सके ना रात के कारिख,
सुहावन भोर कुछ सुघर दीहऽ।
सनेह शेष कुछ अगर दीहऽ,
नेक विसवास के नजर दीहऽ।
जिन्दगी खिल उठे उमंग भरल,
कुछ सुन्नर-सहज पहर दीहऽ।
अउर कुछ साध ना रहल हमरा
मन के फक्कड़-कबीर कर दीहऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

गजल

गंगा प्रसाद 'अरुण'

अभी ई कुर्सिआइल लोग कहाँ ले जाई ?
छुआइल पीढ़ियन के रोग कहाँ ले जाई ?
दोष अपने बा चनरमा में, छिपावे खातिर,
लगावल आदित पर अभियोग कहाँ ले जाई ?
लोग अब जान गइल बा कि कवन करवट ली,
बनावल स्वारथ के आयोग कहाँ ले जाई ?
एक से नेक आ अनेक एक होखे के,
तूरि के जोरे के उतजोग कहाँ ले जाई ?
राज चउपट के आ दरबार जी-हुजूरी के,
नदी आ नाव के संजोग कहाँ ले जाई ?
साज आ ताज बा आपन, समाज आपन बा,
खुला आजादी के उपभोग कहाँ ले जाई ?



केहू कइसे रही

सिपाही पाण्डेय 'मनमौजी'

केहू कइसे रही गोकुला नगर में
वंशी बजाई बोलावेल बन में
आधी रात पिछली पहर में-केहू कइसे.....।
जमुना किनारे आई कंकर मारे
फूटि जाले गगरी डगर में – केहू कइसे.....।
चीर चोराई कदम पर बइठे
अइसे कइसे घूसब जा घर में – केहू कइसे.....।
जल में बास वरुण देवता के

www.bhojpurisahityangan.com

नंगे ना नहा जा भँवर में - केहू कइसे.....।
विरह के आग में सगरी शरीर जरे
प्रेम फाँसी लगावेल गर में - केहू कइसे.....।
'मनमौजी' अतना अनेत करे नटवर
तबो मन श्याम सुन्दर में - केहू कइसे.....।

भगवानपुर, कैमूर

✪ ✪ ✪

दोहा

बरमेश्वर सिंह

खने सोनिया तोत बा, खने सोनिया मीठ।
अजब मुलायम बा मरद, गजब मुलायम दीठ।१।
रहे सूबा बिहार के, गरिमामय इतिहास।
चरवाहा इस्कूल के, आज भइल ऊ घास ।२।
बा अशोक के राज में, सबसे सस्ता शोक।
राह चलत बरबस मिले, खुदरा चाहे थोक ।३।
अपराधिन के हाथ बा, राजनीति के नाव।
लोकतंत्र बा हो गइल, अब बानर के घाव ।४।
नारा नारी मुक्ति के, कइलस ऊ उपचार।
माथा, ढोंढी, कंचुकी, तीनो भइल उघार।५।
लइका-लइकी में इहाँ, मुश्किल बा पहचान।
हाव-भाव पहिराव में, दूनो एक समान।६।
अब नाहीं अउरी रही, अंगिया बीच अलोत।
बसन छेदि बरबस उड़ी, दूनों नवल कपोत ।७।
देहवाद आबाद बा, भोगवाद आबाद।
अर्थवाद के कोख के, बा दूनों उत्पाद।८।
महल रहे भा झोपड़ी, नर होला आधार।
घर-आंगन के बा मगर, नारी सहज सिंगार ।९।
स्रष्टा के सहभागिनी, नारी शक्ति कहाय।
बिना शक्ति के, सृष्टि में, शिव भी शव हो जाय ।१०।
जा घर-कोना बा घइल, गलत-गलत अरमान।
ता घर बइठ ताक पर, राखल धरम-इमान ।११।
रिमझिम रस बरसा गइल, उमड़ि-घुमरि के मेह।
कहे मोर सुन मोरनी, गाढ़ा भइल सनेह।१२।

ग्रा० - पो० - धनडीहा
जिला - भोजपुर

www.bhojpurisahityangan.com

लुगाई के सपना - (पवध-रोपन गीत)

कमल नयन दुबे "कमल"

गइयां के नियरे बथार ए पिया तुहूँ बगिया
लगाइ दऽ
आम लगाइ द अमरूदो लगाइ दऽ
बीचे - बीचे निबुआ अनार
सागवान सीसमा किनारे लगाइ दऽ
बीचवा में फलदार रूखवा उगाई दऽ
चारो कोना रोपऽ देवदार
उड़त चिरइयन के घरवा बसावऽ
धरती मइया के तूं हियरा जुड़ावऽ
देखी लोग गंउआ जवार
परदूसन ले तुहूँ गंउआ बचावऽ
वातावरन के तूं सुघर बनावऽ
सोभा धरती प सोरहो सिंगार
रोकी गरीबी अमदनियां बढ़ाईं
बढ़ियां ले होई लरिकन के पढ़ाई
फाटी ना ओजोन में दरार
करेलें 'कमल' सुनी गीत में बयनवां
कर सइयां अब तूं अइसन जतनवां
होखो एकरो ले त सुधार

दिनारा-रोहतास



www.bhojpurisahityangan.com

लोक-राग

भोजपुरी भँवरगीत (आठ)

डॉ. आसिफ रोहतासवी

तुरि के सनेहिया के डोरिया मथुरा नगरिया गइलऽ ए स्याम (टेक)।
जाहि हम जनिती कि जाके नाहीं अइबऽ,
गोकुला नगरिया के सुधि बिसरइबऽ,
छानि लेतीं दूनो रे चरनिया कि कसहूँ ना जाये देतीं ए स्याम (टेक)।
रहतीं जे कान्हा तोरा रहिया के धुरिया,
रहतीं चरनिया सटल आठो घरिया,
रहतीं चरनिया सरनिया तरन हम पाई लेतीं ए स्याम (टेक)।
भइलीजा काहे ना पवन के झकोरा,
पाछे - पाछे रथवा के धवतींजा तोरा,
छुवत सुघुरावत बदनिया पितम्बरी उड़ावत जइतीं ए स्याम (टेक)।
बँसवे जनमतीं त रहतीं बँसुरिया,
ओठे धरि पोरे - पोरे फेरिते अंगुरिया,
'आसिफ' नजर के अलोता त रचिको ना होखे देतीं ए स्याम (टेक)।

(नव)

एगो पाती भेजऽ-कहिया ले अइबऽ सँवरू
कब ले हमनी के जीयते मुअइबऽ सँवरू (टेक)।
जहिया से गइलऽ ना लिहलऽ खबरिया,
दियना के बातीं लेखा जरऽता उमिरिया,
आउर केतना तू रोआँ डँहकइबऽ सँवरू (टेक)।
असहीं उगल होई ओहिजो अंजोरिया,
तबो ना इयाद परे इहां के अंजोरिया,
आउर केतना ले तरई गिनवइबऽ सँवरू (टेक)।
काहे संगे खेललीजा घुमरी परउवल,
काहे के त खेललीजा खेल उ लुकउवल,
नाहीं सोचलीजा – सभ बिसरइब सँवरू (टेक)।
भले चाहे केतनो गँवार हमनी बानी,
जानीं – रजधानी जाके काटऽ ताड़ चानी,
'आसिफ' दीनानाथ कइसे कहइबऽ सँवरू (टेक)।

आसिफ रोहतासवी, कुदरा, कैमूर



www.bhojpurisahityangan.com

लिरिक - ६
भोजपुरी रिगवेद से

देव कुमार मिश्र 'अलमस्त'

सरस सोम प्रतिभासाली
गंध के अनमोल थाली
बहिर अन्तस कलुस नासक
सोम दिव्य पदार्थ आवऽ
वरुण आवऽ वरुण आवऽ
रसगर सोम सरस पावऽ
सतकर्म के प्रेरक रहल
सद ज्ञान के प्रेरक रहल
प्रियद् सोम अनमोल प्रियद्
तू आवऽ आवऽ आवऽ
वरुण आवऽ वरुण आवऽ
रसगर सोम सरस पावऽ
सोम बहुत रस सुखकारी
सोम बहुत रस हितकारी
सुपथ के प्रिय जे प्रसंसक
कुपथ निन्दक वरुण आवऽ
वरुण आवऽ वरुण आवऽ
रसगर सोम सरस पावऽ

लिरिक - ७

सत्यवादी सक्तिसाली
सरस सोम प्रभावसाली
द्वेस इरिसा कलुस नासक
इनर आवऽ इनर आवऽ
सोमरस अनमोल पावऽ
साधु संत के मित्र रहल
असुर वंस के सत्रु रहल
विविध गुनके विविध निधिजे
इनर आवऽ इनर आवऽ
सोम रस अनमोल पावऽ
शुद्ध सिद्ध ज्ञानल-मानल
विप्र मन्त्रन से सवारल
कथ हमार मानऽ मानऽ
इनर आवऽ इनर आवऽ
सोम रस अनमोल पावऽ

हेतमपुर, भोजपुर

गजल

बैजनाथ 'बटोही'

लागल बा आग अइसन गउँआ जवार में।
बन्दूक बोअल जाता खेतवा बधार में।।
बन बाग सब झुराइल, पतझर के धाह से
कइसन धुँआ धुँआता, बगिया बहार में।।
सावन झरेला झक-झक, तबहूँ उखम मचल
अऊँसा रहल बा चोला, बरसत फुहार में।।
आदम के गाँव बाटे अदमी कहीं ना लउके,
अब ऊ दरद कहाँ बा, केकरो गोहार में।।
कोइलर बिलख रहल बे कउअन के गाँव में,
बकरी बेहाल बनली, कुकुर सियार में।।
जेहि रहे अगोरिया, ऊहे बनल लुटेरा,
बिकरी बद्दल बा ओकरे, मेला बजार में।।
गंगा रही पवित्तर, अब गंदगी बहे
बहते गइल बटोही रकते के धार में।।

तिलौथू, रोहतास

www.bhojpurisahityangan.com

माटी कहे

विद्या शंकर "विद्यार्थी"

माटी कहे काटीं मत, हमरो के बांटी मत
अधे-आध अरिया बा, एकरा उलाटीं मत।
कइले तकरार बानी, आपुसे में मार बानी
जब दिले ना फाटल, त रउओ मत फाटीं।।
अंखिया सुझत नइखे, मनवा बुझत नइखे
बिना सिंघ के मूंड़ी, रउओ झाटीं मत।
छोटे छोटे खेत होई, सभ के सकेत होई
बात बइ के मानी, रउओ हमरा के डाँटी मत।।
तिरिया के तिरउतानी, लाठी लेके फिरउतानी
निमन बात प, रउओ कहूनाठीं मत।।
बइ बेटा धरउताटे, छोट पांव परउताटे
सनकी के लहु, रउओ चाटीं मत।
भाई के रिझाई जाईं, खिंचड़ी सिझाईं जाईं
सातु-धोंधा, रउओ घोलाटीं मत।।
रउरा सुघर लागी, झोपड़ी भी घर लागी
नन्हीं गो ना बिनी, रउओ खाटी मत।
निन खरहने आई, मिलीं गले भाई भाई
घरफोरन छाति, रउओ साटीं मत ।।
किनी ऊ कुदारी लेलस, रउरा के उधारी देलस
मटिया के बुझीं, रउओ माटी मत।
पहिल छेव मोरा हिया, दोसर छेव भइया जिया
दाबि के नरेटी, रउओ घाटीं मत।।
धधकत अंगार बाटे, रोके के संघार बाटे
मुदई ना आंटे, रउओ आंटी मत।
सरधा से संगे बइठीं, अलगा खाति ना अइठीं
खोदी के गिरायीं, रउओ जाठी मत।।
आर गोहड़ रउरा करीं, बड़े परिहथ धरीं
दम लीहीं, रउओ हरनाठी मत।
समहुत कराईं आईं, दुनों भाई संगे गाईं
शंकर जी के, रउओ पलाटी मत।।

गिरिडीह, (झारखण्ड)

www.bhojpurisahityangan.com

जरावऽ जनि जिअरा

डॉ. अमल सिंह

जरावऽ जनि जियरा अलोता लुकाइके।
गंगा-यमुनवा के बीचहिं मड़इया पर,
रहिया निहारी ला अँखिया पसारि के,
कब देबू दर्शन अंजोरिया में आइके।
जरावऽ जनि.....।
सूतल रहबू कबसे सुमेर पर्वतवा पर,
झींगुर के बोली अस नकिया बजाइके;
जाग के जगाव अन्हरिया भगाइके।

'हूँ' कहि उठिके चलऽ तु कैलसवा पर,
तीनों तिरलोकवा में दीयरा जराइके;
बुलावे पिया कबसे मुरलिया बजाइके।
बिना तरू फूलेला फुलवा अकसवा पर,
फुलवा के बीचवा में चन्दा चमकाइके;
'अमल' बुलावे तोहे सेजरिया सजाइके।
जरावऽ जनि.....।

भारतीगंज, सासाराम



छंद–घनाक्षरी

दिनेश गर्ग

होली खेले अइहें की ओनहीं लुकइहें भला
जिनिगी भर इहलन का आजो डहँकइहें।
सोना के महल छाड़ि अइलें गनऊरा में
गाँजा-भाँग रोपि-रोपि हमके जुझइहें।
रोजे आबकारी के दरोगा घर कोइति बा
अपने त माँगि मुँह करिखी लगइहें।
जिला आपूर्ति के नोटिस बा कहिदिहऽ,
बाहन गनेश के ना हमसे बन्हइहें।
बरघा के चारा कइलें किसुन घोटाला अब,
दाना जुरइहें की कतहीं भठिअइहें।।

× × × × × × ×

आइल बा होली तनि मन में बिचार करी,
अपने निपिकिरा बन आसन लगाइला,
कुर्ता बिन बिधइ गनेश गोइ पटके लनु,
कातिक के धोती हम कहाँ से जुटाइला,
अइसन अबिर-रंग मँहगी में मारि गइल,
दाम सुनि सबसे बागार में लगाइला
बरघो के बेंच घरे पइसा ले आइब की,
होली में हाँड़ी उपासे रखवाइला।।

पहाड़ी, रोहतास

www.bhojpurisahityangan.com

शब्द - संपदा

भोजपुरी के स- बद सं-पदा

अनकी पारी - एथुआ

'नकिति'

एह सबद पर करीबन तीस बरिस से बिचार करत आवतानी। कवनो-कवनो भेद खुले में त जिनिगिए पूरा लाग जाला। एगो विदवानन के साभा मे सभे पढ़ल लिखल माहटर, परफेसर, वकील, अधिकारी एगुइे मुँह से सभे 'सहस्त्राबाहु' कहत रहे। टोकला प एगो एम. एल. सी. परफेसर के बहुते खराब लागल आ ऊ अफनाके कइलन कि हम जवन कहलीं ह ऊहो ठीक वा। हम उनुकर विद्वत्ता बहुत नजदीक से जानत रहीं, चुप हो गइलीं। राजनीतिग्यन खातिर कुछो माहुर नाऽह। लेकिन ई जरूर ठीक ह कि एगो सबद के मूल जान गइला पर बहुते अनन्द आवेला आउर ना जाने वाला के मुरूखता पर हँसी भी। अइसने ई 'एथुआ' एगो बड़ा विचितर शब्द वा। सासाराम के पुरनका कॉलेज के हिन्दी विभाग में एगो असइने पुरनकट सर रहीं जेकर नाँवे एही सब के अधिका प्रयोग कइला से पइ गइल रहे– 'एथुआ सर'। उहाँ के ई सब्द चार मिनट तक बोले में बीसो मरतबा सहयता करत रहे। अइसे अपना विभाग के परफेरार के क्लास में जलदी भेजे के होखे त उहाँ के कहीं – 'का एथुआ प बइठ, के एथुआ मचवले बाइऽ। अरे एथुआ से अइला पर तुरंते एथुआ लेके फिर एथुआ में पहुँच जाए के चाही'। कहे के मतलब उहाँ के अतने रहे कि कुर्सी प बइठ के गप बेकारे करत बाइऽ क्लास से आके तुरंते रजिस्टर लेके फिरू क्लास में पहुँच जाए के चाही। पढ़ावत खानी चाहे भासन देवे में एगो वाक्य में दस बेरी एह सब्द भगवान के उहाँ के सुमिरन करीं। सुरसती के सराप के बिरथा कर देवे वाला ई सब्द हमरो के मथ देलस। सोचे के बाध्य कर देलस। आजु के कैमूर आ पहिले के भभुआ के अदिमी से बातचीत करे में पाता चल जाई कि ई एथुआ कहे वाला अदिमी भभुआ के रहे वाला जरूर ह। वकालतखाना भी गप करे के एगो नीमन जगहा ह। ओहिजा भी सूचना के भरभार रहेला। अपना विषय में ना दोसरे के विषय में जादा बातचीत होला। एगो चचा-भतीजा के बातचीत होखे लागे त रउआ अपने पता चल जाई कि ई लोग केथुआ, एथुआ के प्रयोग करे वाला ह। एकर परमान बनिके ईहे सब्द समने आई आ पता बताई। एक बेरी भभुआ के एगो वकील से एहिजा के अदिमी के रहता चलत सड़क पर भेंट हो गइल। डंड-परनाम के बाद ससरावँ वालू पुछले कि वकील साहेब अतना सबेरे कहवाँ से आवत बानीं आ केने जाइब? एकर उत्तर वकील साहेब के मुँह से सुन लीहीं– का कहीं एथुआ निकलली हँ, एथुआ लावे खातिर एगुइो एथुआ ना मिलल,आज एथुआ बेचे वाला अइबे ना कइलन अब एथुआ चलल आवत बानी का करब एथुआ देने चल जाइब'। अब रउआ बुझाय कि इहाँ के का कहलीं त चीठी भेज के बता देब। बात अपने रहे के इहाँ के सब्जी मंडी में बड़ा सबेरे चल गइल रहीं आ खाली हाँथ लवट के घर देने जात रहीं। अइसन सैकड़ गो उहाँ के अदिमी के बाकया बा। एहसे अब एकरा पर विचार कइल जरूरी हो गइल। कवनो सब्द के मूल पहिले

www.bhojpurisahityangan.com

खोजाला। संसकिरित में एकरा अनुरूप हमरा 'इत्थं' शब्द मिलल। एह एथुआ, के व्युत्पत्ति एकरा से मानल जा सकेला। संसकिरित में 'इत्थं' के प्रयोग एकरे अनुसार बुझात बा।

एगो प्रसिद्ध असलोक में एकर जिकिरो बा –

इत्थं विचिन्तयति कोश गते द्विरेफे, हा हन्त हन्त नलिनी गज उज्जहार। 'अइसन सोचिके' अइसन बात बा, 'हिन्दी में ऐसा है कि' सकुन तकिया नीअन खूब चलेला। कुछ लोग कहे के मतलब बा, अपने रामजी आदि के प्रयोग करेला। एह सब्द के परम्परा आ प्रवृत्ति दूनो प्राकृत अपभ्रंश आ कुल्ही मध्यकालीन आर्यभासा में आइल। ई सब्द साँचो बड़ा पुरनकट बा। प्राकृत में इत्थं-इत्थु आ 'इत्थि' दूनों रूप धइलस! मुनिराम जी के 'पाहुड़ दोहा' में ई दूनो रूप आइल बा – 'को बंदउ हलि इत्थु'। पुरिसु णउ इत्थि ण वि एहउ (पा० दो०) प्राकृत पैंगलम् में भी 'इत्थि' शब्द के प्रयोग भइल बा। अगर बतावे के होखे त एह इत्थि के विकास इदम् + त्र चाहें एत्थ चाहें एतत् + त्र के साथे अधिकरण एकवचन चिह्न 'इ' जोड़के मानल जा सकेला। इत्थ + इ = इत्थे आजुओ पंजाबी में बोलल जाला। इत्थि = अस्यां अब 'एत्थु' पर विचार कइल जाव। एत्थु पाहुड़ दोहा में एह तरह आइल बा। 'तुहु तो सिउ एत्थु चडाहि (पा० दो०) केम्व एत्थु अणिज्जइ (ष० सिं० च०) तं एत्थु गंथि मइ कहउ णाहि (पा० च०) आजकाल के एगो बातचीत के सिलसिला में खूब चलल बा। आजुके डेट में। इहेबात के सकुनतकिया रूप में हमरा गाँव के एगो बाबा लागस, बोलत रहन– 'एती बेरा'। हमरा इहाँ एगो मास्टर बाड़न बिना 'कहे के मतलब' बोलले एगुड़ो वाक्य पूरा ना करस। त संसकिरित में 'इत्थ' अव्यय ह (इदम् + थम्) इसलिए, अतः, चाहे एह रीति से, इस प्रकार "इन दिस मैनर" के अरथ में। 'कुमार संभवम्' में कालीदास जी एकर प्रयोग एहतरह से कइले बानीं। इत्थं गतेः किमपि भूतमदृश्य रूपम्। इत्थं गते-एह परिस्थिति के कारन। इत्थंकारम् - एह प्रकार। कथमित्थं भूता (मालविकाग्नि) इत्थं विध - एह प्रकार के गुनन से जुक्त। इत्थं विचिन्तयति। अंग्रेजी में एकर माने होई– दस, ऑफेन। एह तरह से भोजपुरी के ई सकुनतकिया रूप में मसहूर सब्द के बड़ा गहिड़ परम्परा आ अरथ निकलत बा। रउआ अपना के व्यक्त कइल चाहत बानी, सब्द आवत नइखे, राउर भीतर के खोखलापन के राछा करत, राउर वाग्धारा के निरन्तरता बनावे रखे में एकर कतना सहजोग बा। भोजपुरी भासी लोग के एह सब्द के प्रति कृतग्य होखे के चाही। आ भासा के दूनो गुन एह में परगट बा। जवना से भाव परगट होला आ ओकरा के छिपावलो जाला।

अगर कोई साहित्यिक भाई के संशय, होखे त आपन बात आगे बढ़ाई।

(नकिति)

www.bhojpurisahityangan.com

आदरणीय डाक्टर साहब,
साहब बंदगी।

पढ़नी राउर 'सुरसती'
हरियर भइल मनमती।
मन चाहन बा अगला अंक
भेजी जल्दी हो निहसंक।
राउर बानी आपन अंग
बिन परिचै के जानब संग।
जननी, भाषा, भूमि तीन
माता से होईं उऋण।
पल-पल करे के बा याद
हर भाषा के जनक 'नाद'।

हम 'हतु' के संपादन करतानी। 'हतु' एक अद्वितीय खोज बा। आपन आशीर्वाद दीं कि 'हतु' अनवरत प्रकाशन के दिशा में बढ़ो।

'सुरसती' के सदस्यता ग्रहण करे के चाहत बानी। सदस्यता शुल्क जलदी भेजब।

शेष बंदगी।

राउर
'नरेन्द्र अनुचर'
सीतलपुर, गिरिडीह

✪ ✪ ✪

पूजनीय डॉ० साहब,
साहेब बन्दगी

हम राउर सम्पादित तिमाही पत्रिका 'सुरसती' जनवरी अंक पढ़नी, पढ़के मन गद-गद हो गइल। विशेष ई जान के हम बहुत खुश भईनी कि रउआ सभे, भोजपुरी भाषा सेवा में रत बानी स। तथा येह आपन भाषा के शिखरासीन करेके उत्तम बिचार बा।

विसेस हम रउआ सभे के असिरबाद से श्री सद्गुरु कबीर साहब के प्रामाणिक ग्रंथ बीजक पर लेखनी उठवले बानी, जवन कि ग्रंथ भोजपुरी भाषा से भरल पूरल बा। बाकि आपन अंग जान आशिश पान कराई। ओकर नाँव 'हतु' बा। छपला प भेजब।

पत्रोत्तर के आशा में एगो भोजपुरिहा

निराला प्रसाद 'शब्द भेदी' गिरिडीह

✪ ✪ ✪

www.bhojpurisahityangan.com

प्रिय सम्पादक जी,

नमस्तें,

राउर कृपा-पत्र मिलल। जानकारी अवरू आशीर्वाद प्राप्त कर के कृतज्ञ बानी। रउआ अपना बारे में "लेखक-संपादक" के सम्बन्ध में देल राउर अभिव्यक्ति में हमरा "असंबन्धातिशयोक्ति-अलंकार के सा थे 'रहीम' के ऊ दोहो इयाद हो आवत बा कि "रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मम मोल"। रउआ कुँवर सिंह विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहीं आ हम जैन कालेज में १९५२ में विद्यार्थी बन के प्रवेश पवले रहीं। एहू नाता से रउआ हमरा हरदम पूज्य बानी। हम अपना जीवन के तेंतीस बरिस वित्त (अंकेक्षरा) विभाग में वरीय अंकेक्षक रूप में बिता के ९२ में अवकाश प्राप्त कइले बानी। एहतरी हम त बरावर दू - दू चार करत रह गइनीं। अवकाश प्राप्ति के बाद रउए अइसन सहृदय के प्यार अवरू आदेश पा के भोजपुरी साहित्य में लपटाइल बानीं। आज बहुते कम लोग अइसन बा जे रउवा अइसन पीठ ठोके कि "असहीं लिखत रहीं" अवरू "भोजपुरी के सेवा करत रहीं" ई हमरा खातिर बड़ बुजुर्ग के आशीर्वाद बा जवन भविष्य खातिर संबल के काम करत रही।

रउआ से उत्साहित होखि के एगो विवेचनात्मक रचना भेज रहल बानीं। यदि एकरा के प्रकाशित करे के नौबत आ जाय त चइत माह के पत्रिका में स्थान देवे के कृपा करबि। इच्छित शोध-लेख के छाया प्रति भेज रहल बानीं। एगो अवरू सलाह देल चाहत बानी कि जे ग्राहक ना रहलो प रचना भेजत बा ओकर प्रकाशित पत्रिका के "मानद प्रति" भेजे के कृपा जरुरी बा। अवरू सभे हरि-कृपा से ठीक बा।

राउर

✪ ✪ ✪

भाई जी,

स्वस्थ होखबि। आसा बा। भोजपुरी भासा के विकास में राउर जोगदान भुलइते ना भुलाई। रिगवेद के अनुवाद कविता भेज रहल बानीं एकरे के छापल जाई।

अपने के

देव कुमार मिश्र "अलमस्त"

-: भोजपुरी गीत :-

माननीय डॉ. नन्द किशोर तिवारी जी के प्रति

शब्द सम्पदा के तू सोधक
भोजपुरी भासा के मोदक
हउअ पाणिनि निअन तेजस्वी –
सब्द साकित के ज्ञानी
जिह्वा पर बसति भवानी
भोजपुरिअन के पानी
महाबीर नीअन अनुबादक

www.bhojpurisahityangan.com

महाबीर नीअन सम्पादक
जुग आई तहार जुग बोली
साहित्यिक स्वभिमानी
जिह्वा पर बसति भवानी
भोजपुरिअन के पानी
चन्दा रोहतास जनपद के
हवऽ हवा मलया परबत के
हिमगिरि अस बिराट पुंसा तू
नव-रस-गुन के खानी
जिह्वा पर बसति भवानी
भोजपुरिअन के पानी

○

आदरणीय तिवारी जी,

सादर प्रणाम! अपने के भेजल 'सुरसती' तिमाही के जुलाई अंक श्री गंगा प्रसाद अरूण जी के हाथे मिलल। धन्यवाद! 'पनघट' के जुलाई-सितम्बर अंक के सम्पादकीय में 'सुरसती' के नाम पढ़लीं बाकिर राउर पता के अभाव में 'निर्भीक संदेश' भेजे में असमर्थ रहीं। बाकिर अच्छा भइल कि अरूण जी से रउरा भेंट भइल आ दूनो पत्रिका के आदान-प्रदान संभव भइल।

'सुरसती' पढ़लीं हा। अच्छा लागल हा। रचना सभ ठीक लागली हा स। बस दिक्कत भइल त खाली शब्द के जबरजस्ती भोजपुरीयावल गइला प, जइसे-आतम कथा, सब्द सकती, वियान, अध्यातम, बेआकरण, सहसराम वोगैरह। अनेक अइसन शब्द बाड़ेस जवना से भोजपुरी के कवनो फायदा नइखे होखे वाला। दोसर भाषा-भाषी के के कहो भोजपुरिहा पाठक के भी पढ़े में असुविधा हो रहल बा। जनता टकसाल बीया। भोजपुरी में हिन्दी-अंग्रेजी-उर्दू के शब्द पच-खप गइल बा। एकरा के जबरजस्ती भोजपुरियावल ठीक नइखे। हिन्दी में भी भोजपुरी-उर्दू के शब्द पच-खप गइल बाड़ीस। दोसर भाषा के शब्द शामिल भइला से भोजपुरी समृद्धि होई। गैर भोजपुरी भाषी भी पढ़ी आ समझी। आज भी भोजपुरी में एकरूपता के अभाव बा।

'सुरसती' के कवर पेज भी थोड़ा उदास लागल हा। अपने से निहोरा बा कि कवर पेज के रंग अलग राखीं। जवना से पत्रिका दूरे से देखनउर लागे। अचानक देखला प बुझात बा कि कवर निकल गइल बा। इ अन्दर के पेज ह। खाली कवर के रंग अलग भइला से प्रकाशन खर्च में अन्तर ना पड़ी आ पत्रिका में भी निखार आई।

बाकी छपाई, सफाई, पेज बढ़िया लागल। सम्पादन कला सराहे जोग बा। विश्वास बा, पत्रिका के स्तरीयता में लगातार निखार आवत निष्कण्टक निकलत रही– इहे कामना के साथे–

अपने के अजय कुमार ओझा
सम्पादक 'निर्भीक संदेश'
बिरसानगर, टेल्को, जमशेदपुर,